इतिहास लेखन की वैद्यानिक मार्यादा ''कोशी अंचल के संदर्भ में''

डॉ0 मो0 अरसद

आंचलिक इतिहास लेखन संबंध में जितने भी उल्लेख मिलते हैं, सबके सब चौथी–पाँचवी शताब्दी के बाद के हैं। सर्वप्रथम विष्णुधमोत्तर पुराण में मिथिला राज्य के रूप में उल्लेखित हुआ है।

प्राचीन संस्कृत वांग्मय और अभिलेखों में कोशी के प्रवाह क्षेत्र का भव्य रूपांकन हुआ है। वाल्मीकी रामायण, महाभारत, विष्णुपुराण, वाराहपुराण, श्रीमद्भागवत, कुमारसंभव आदि में ऋषि–मुनियों के तटवर्ती आश्रम, नदी तीर्थ, संगम स्नान आदि के अतिरिक्त ताम्र अभिलेख (गुप्तकाल) आदि इसके ज्वलंत उदाहरण है। डॉ0 प्रकाश चरण प्रसाद ने इसे ''कुशिक संस्कृति'' का अभिलेखिय प्रमाण कहा है (कोशी महोत्सव)। बिहार और नेपाल की अंतर्राष्ट्रीय सीमा के आर पार वराह क्षेत्र (वराह विष्णु) भारदहर (कंकाली), सखरा (छिन्नमस्ता), आदि एवं भारतीय सीमांत क्षेत्र के गढ़ बरूआरी (दशमहाविद्या), विराटपुर (चण्डी), सिंहेश्वर (शिव), शाहमडहरा (दुर्गा), नयानगर (चन्दनवन), वंशीरौता (भगवती), पिपरा, सिरीपुर–मिलकी, गाजी पैता, बनगाँव – महिषी (तारा), कन्दाहा (सूर्य) वौरनेय (नाग) आदि जैसे पुरावकुल स्थलों की भरमार है, जिनके व्यापक परिप्रेक्ष्य में कोशी की संस्कृति उजागर होगी।